Ramor

बाप पूछते है कि किसके पास आये हो? और सत्संगो मे कोई भी ऐसे नही समझते है कि हम बेहद के बाप के पास जाते है। बच्चे जानते है कि जो हमारे कुल के होंगें वो जरूर बाप से आकर वर्सा लेंगें। यह ज्ञान मार्ग है। भक्ति मार्ग नही है। आधा कल्प तक भक्ति की है। सतयुग मे भक्ति होती नही है। भक्ति मे मनुष्य थक जाते है। बिमार हो जाते है। यहाँ तो तकलीफ होने की कोई बात ही नही है। सदैव खुशी ही रहती है। पवित्र तो बनना ही है नां। जब तक पवित्र नही बनेंगें तब तक मुक्ति धाम जीवनमुक्ति धाम मे जा नही सकते है। जो बच्चे रैडाप्ट होते है वो समझते है कि इनैस हमको यह-2 वर्सा मिलना है। तुम भी जानते हो कि हमको बेहद के बाप से बेहद स्वर्ग का वर्सा मिलता है। बाप आये है नई दुनियां स्थापन करने। भल है तो बहुत ही साधारन कितना ऊंच मर्तबा मिलता है। विश्व की बादशाही मिलती है। सतयुग में उनकी राजधानी थी। और धर्म तो सभी खत्म हो जावेंगें। गाया भी जाता है कि बाप आकर ब्राह्मण देवता क्षत्री... धर्म स्थापन करते है। सिर्फ कृष्ण का नाम डालने से ही सारा काम अगडम, बगडम हो गया है। भगवान ने ही राजयोग सिखाया है। कृष्ण तो भगवान नही है नां। भगवान सबका वो ही है। ऊंच ते ऊंच भगवान एक ही है। रचता भी एक ही है। वर्णन भी उनका ही होता है। सृष्टी का चक्र बच्चो की बुधी मे है। अगर कोई मित्र सम्बधी आदि साथ नही देते है तो फिर छोड देना चाहिये। समझा जाता है कि यह नही चल सकेंगें। विघ्न भी तो पड़ते है नां। प्यार से हर्षित मुख बन कर समझाना है। तंग नही होना है। कल्याण करने की कोशिश करनी है। हमारा तो धर्म ही है किसीका कल्याण करना। कोई तो बहुत-2 समय भी लेंगें। गाया भी हुआ है नां हे प्रभु तेरी लीला.. तुम बच्चे भी कहते हो कि बाबा आपकी जो समझाने की युक्तियां है वो न्यारी ही और कोई मे ताकत नही है। ऐसे भी नही है कि रचना कोई नई रचते है। रचना तो है ही। सिर्फ बाप आकर पुरानी दुनियाँ को चैंज करते है। मनुष्य नही जानते है कि 84का चक्र कैसे चलता है। बच्चे ही समझते, समझते है कि अब हमारा 84का चक्र पुरा हुआ है अब हम वापस घर जाते है। विनाश भी सामने ही खडा है। बाबा पवित्र बनाने आया है। पवित्र जरूर बनना है। तुम सभी को सुख का रास्ता बताते हो। तुम्हारा आवाज बहुत फैलना है। रात दिन सर्विस का ही ख्याल रखना है कि कैसे कोई को समझावें। खर्चा होवे तो हर्जा नही है। इनका भी सारा दिन यही ख्यालात चलते है। अब बच्चे आपस मे मिलेंगें। क्या-2 करना है जो कि सभी का कल्याण हो। बाबा ड्रामा अनुसार ही मदद देते भी है। अच्छे-2 को मंगवाया जाता है। यह सारा बाम्बे वाले रमेश को ही ख्यालात चलता है कि सर्विस कैसे हो। जो कुछ भी पास्ट हुआ है वो सब ड्रामा अनुसार। ड्रामा मे जो कुछ भी है वो ही होने का है। पास्ट मे जो कुछ हुआ है सो खत्म। भूल भी ड्रामा अनुसार ही होनी है। नाराज नही होना चाहिये। इस समय अगर भूल भी होती है तो उसमे भी कल्याण भरा हुआ है। पैगाम तो सबको देना ही है। बाप तो एक ही मन्त्र देते है कि घर मे बैठे ही हुये मुझे याद करो। देह के सभी सम्बन्ध छोड कर अपने को आत्मा समझ कर मुझे याद करो। सभी को वापस जाना है यही बोल-2 तुम बच्चो को भूल जाता है। पुरुषार्थ करना करवाना है। चित्र भी जो बनवाये जाते है उसमे भी कोईभी ऐतराज उठा नही सकते है। बच्चों को रचता की रचना का आद मध्य अन्त का सारा ज्ञान बुधी मे है। बाकी तो पुरुषार्थ चलता है दैवी गुण धारन करने लिये। माया के विघ्न पड़ते है। तूफान आते है। बाबा से पूछ भी सकते हो। सर्जन तो सभी का एक ही है नां। हरएक अपना-2 पूछ सकते है कि इस-2 बात मे क्या करना है। बाबा सभी रास्ता बतावेंगें। मनुष्य चित्र देख कर बहुत वण्डर खावेंगें। दुनियां के मनुष्य पवित्र थे अब अपवित्र है। अब बाप कहते है कि मुझे याद करो तो पावन बन जावेंगें। ऐसे-2 बच्चे सर्विस कर सकते है। वो तो है जिस्मानी होस्टल देखो। तुम हो रूहानी सर्विस मे। सदैव प्रेम से ही रहना है। लून पानी कुछ भी नही होना चाहिये। शिव बाबा मीठा है तो उनके बच्चे है नां। बच्चो को गटनाइक